उपसंहार

उपसंहार

उपेंद्रनाथ अश्कजी हिंदी के बहुमुखी प्रतिभासंपन्न साहित्यकार रहे। पारिवारिक झगड़े, परिस्थितियों की विकटता तथा समाज के जुल्म आदि को उन्होंने अपने साहित्य का विषय बनाया है। उनके पूरे साहित्य में मध्यवर्गीय समाज का प्रतिबिंब नजर आता है। उन्होंने मध्यवर्गीय समस्याओं को हमदर्दी से समझा, परखा और अपने साहित्य में उजागर किया है।

अश्क के जीवन तथा साहित्य का अध्ययन करने के बाद यह निष्कर्ष निकलता है कि उनका बचपन दुःखमय और पारिवारिक कलहपूर्ण वातावरण में अनेक मुसीबतों का सामना करते हुए बीता। बचपन से ही दारिद्य में पलनेवाले अश्क ने लगन और आत्मविश्वास से जीवन में सफलता पायी। उन्होंने अनेक जगहों पर नौकरिया की। जहाँ उनके स्वाभिमान को ठेस पहूँची उस नौकरी को उन्होंने तिलाँजली दे दी। अश्कजी ने जीवन में तीन विवाह किये। उनके तीसरे और अंतिम विवाह से उनके जीवन में स्थिरता आयी। उनकी तीसरी पत्नी कौशल्या का नीलाभ प्रकाशन की स्थापना और अश्क को यक्ष्मा जैसे रोग से बचाकर वापस लाने मे बहुत बड़ा योगदान रहा है। कौशल्याजी सच्चे अर्थ में अश्कजी की सहायक, साथी, सहयोगी, मित्र, प्रेमिका, प्रशंसक, आलोचक और सफल पत्नी के रूप में हमारे सामने आती है। बचपन से ही अश्कजी का जीवन संघर्षमय रहा है। शिक्षा स्वास्थ्य, जीविका, घर तथा साहित्य सभी जगह उन्हें संघर्ष करना पड़ा। उनके अनेक सपने थे - अध्यापक, वक्ता, फिल्म अभिनेता तथा वकील बनने के। इन सपनों को उन्होंने संघर्ष से साकार कर दिखाया। हर एक चीज का उन्होंने अनुभव लिया पर साहित्य-सृजन में जो आनंद, सुख उन्हें प्राप्त हुआ वह और किसी चीज में नहीं मिला। साहित्य के उपन्यास, एकांकी, नाटक, कहानी, काव्य, अनुवाद, संस्मरण आदि सभी क्षेत्रो में उन्होंने सफलता पायी है। सरलता, स्पष्टवादिता, संघर्षशीलता और स्वाभिमान उनके जीवन की मुलभूत विशेषताएँ थीं।

अश्क के नाटकों का संक्षिप्त विवेचन करने के बाद यह निष्कर्ष निकलता है कि अश्क के नाटकों में उनका पहला और एकमात्र ऐतिहासिक नाटक छोडकर बाकी सभी सामाजिक नाटक हैं। उनके ज्यादातर नाटक समस्या-प्रधान हैं। "जय-पराजय" में अश्क ने राजपुतों की आदर्श और मर्यादा की थोथी अहंभावना पर व्यंग्य किया है। "स्वर्ग की झलक" में आधुनिक शिक्षा और विवाह की समस्या को लिया गया है। "छठा बेटा" में पारिवारिक कलह याने पिता पुत्रों के कटु सम्बन्धों और एक-दूसरे की दायित्व हीनता की भावना पर हास्यपूर्ण व्यंग्य किया है। "कैद" और "उड़ान" में नारी समस्या के दो पहलुओं का चित्रण है। "कैद" में सामाजिक मर्यादा में आबध्द घुट-घुटकर जिन्दगी जीनेवाली नारी और "उड़ान" में विद्रोह कर अपने स्वस्थ मार्ग की खोज में निकल पड़नेवाली नारी का चित्रण है। "अलग-अलग रास्ते" में विवाह और प्रेम की समस्या को लिया है। "अंजोदीदी" में नियमबध्द जीवन को सनक बनानेवाली अंजो के चरित्र पर प्रकाश ड़ाला है। "भँवर" में कुण्ठा तथा व्यक्तिनिष्ठा से पीड़ित नायिका भँवर में कैसी फँस जाती है यह दिखाया है। "पैंतरे" नाटक में मकान की दुर्लभता की समस्या को लेकर फिल्मी जगत के झूठ, खुशामद, स्वार्थ और पैंतरेबाजी से भरे जीवन की झलक प्रस्तुत की है। "बड़े खिलाड़ी" में अश्क ने विवाह की समस्या को उठाया है। अश्क ने समाज के यथार्थ को अपने नाटकों में समस्याओं के रूप में प्रस्तुत किया है। बचपन से ही अश्कजी को नाटक आकर्षित करते रहे हैं। उन्होने नाटक पढ़ने तथा देखने के साथ-साथ उनमें अभिनय भी किया। इसीकारण रंगमंच के गहरे ज्ञान से वे परिचित थे। उन्होने रंगमंचपर खेले जानेवाले नाटक लिखें और हिंदी रंगमंच के विकास में अपना योगदान किया। अत्यल्प त्रुटियों को छोड़कर "वस्तुविन्यास", "संवाद", "दृश्यविधान", "रूपसज्जा", "रंगसंकेत" आदि सभी दृष्टियों से अश्क के नाटक रंगमंचीयता के अच्छे उदाहरण हैं।

अश्क के नाटकों की नायिकाओं के स्वरूप पर प्रकाश डालने के बाद हम इस निष्कर्ष तक पहुँचते हैं कि आधुनिक हिंदी नाटकों की व्यापकता का प्रभाव देखते हुए नाटक की नायिका को परिभाषा की सीमा में बाँधना मुश्किल हैं फिर भी नाटक के कथानक के विकासक्रम में प्रमुख स्थान रखनेवाली और नाटक को फलागम की ओर ले जानेवाली नारी को नायिका कहा जाता है। उनके सभी नाटक नायिकाप्रधान हैं। जो नायक प्रधान नाटक

हैं उनमें मैंने नाटककी मुख्य नारीपात्र को नायिका माना है। अश्क का एकमात्र ऐतिहासिक नाटक छोड़कर बाकी सभी नाटक मध्यवर्गीय परिवार से संबंधित हैं इसीलिए उनके नाटकों की नायिकाओं का शैक्षिक, वर्गीय और आर्थिक दृष्टि से विभाजन कर उनका विवेचन किया है। शैक्षिक दृष्टि से शिक्षित और उच्चशिक्षित नायिकाओं में कुछ ऐसी शिक्षित नायिकाएँ हैं जो शिक्षा के प्रभाव के कारण सामंजस्य स्थापित कर परिवार में उत्पन्न समस्या को सुलझाने का प्रयास करती हैं। कुछ नायिकाएँ अपने साथ होनेवाले अन्याय का विरोधकर विद्रोह कर उठती हैं। साथही कुछ नायिकाएँ ऐसी भी हैं जो शिक्षित होकर भी सामाजिक परंपरा का विरोध करने में असमर्थ दिखाई देती हैं। "भँवर" की नायिका उच्चशिक्षित होने के कारण अपने आपको बुध्दिवादी समझती है। शिक्षा के कारण नायिकाओं के व्यवहार में अलग-अलग परिवर्तन दिखाई देता है। वर्गीय और आर्थिक दृष्टि से देखा जाये तो सामान्य मध्यवर्ग की कुछ ऐसी नायिकाएँ हैं जो केवल घर-परिवार संभालती हैं और परिवार में निर्माण समस्या का समझौते के साथ सामना कर अपना कर्तव्य निभाती हैं। मध्यवर्ग ऐसा वर्ग है जो समाज की लांछना से डरकर भी रहता है और अगर गलत धारणाओं के प्रति लड़ता है तो विद्रोह किये बिना भी रहता नहीं है। मध्यवर्ग की कुछ ऐसी नायिकाएँ भी हैं जो अन्याय का विरोध कर स्वावलंबी बनकर निकल जाती हैं। मध्यवर्ग की नायिका सुजला नौकरी करनेवाली और आर्थिक दृष्टि से ठीक होते हुए भी परिस्थिति से संघर्ष नहीं कर पाती है। "भँवर" की उच्चमध्यवर्गीय नायिका उच्चशिक्षित होकर भी माता-पिता के आधार पर जीनेवाली परावलंबी नायिका है।

अश्क के नाटकों की नायिकाओं के पारिवारिक जीवन के अध्ययन के बाद यह निष्कर्ष निकलता है कि अश्क के नाटकों की ज्यादातर नायिकाएँ शादी-शुदा होने के कारण उनका अपने पति के साथ संबंध गहरे रूप में प्रकट हुआ है। भारतीय संस्कृति में विवाह नारी के जीवन में अविभाज्य घटक है और बदलते युगों के साथ पति-पत्नी के सम्बन्ध में टकराव आ रहा है इसका चित्रण विवेच्च नाटकों में दिखाई देता है। माँ, बेगम रशीद, और बड़ी रानी ये नायिकाएँ अपने पति को परमेश्वर मानती हैं। वे त्याग, निष्ठा, सहनशीलता तथा सेवापरायणता की प्रतिमूर्ति हैं। अप्पी अपने पूर्व प्रेमी को भूल नहीं सकती अतः वह अपने पति के साथ खुश नहीं है फिर भी परिस्थिति से मजबूर होकर अपने अन्तर्मन को दबाते हुए

घिसी-पिटी जिन्दगी का मार्ग अपनाती है। समाज में अंजो जैसी स्त्रियाँ भी होती हैं जो अपने अहं के तथा सनकी प्रवृत्ति के कारण स्वयं के साथ अपने पति के जीवन में भी अन्धकार फैलाती हैं। इसी के साथ-साथ नायिकाओं के माँ, बहन, भाभी आदि रूपों पर भी प्रकाश ड़ाला है। अश्कजी ने अपने नाटकों में विविध प्रकार की नायिकाओं का चित्रण बड़ी कुशलता के साथ किया है। साथ-साथ उनकी अनेकविध समस्याओं की ओर पाठक का ध्यान आकृष्ट किया है। अश्क के नाटकों के परिवारों के सदस्यों का नायिकाओं के साथ संबंध देखते समय नायिकाओं के विभिन्न रूप दृष्टिगोचर होते हैं।

अश्क के नाटकों की नायिकाओं के मनोविज्ञान के अध्ययन के बाद यह निष्कर्ष निकलता है कि अनेक स्थानों पर एक स्वतंत्र विकसित व्यक्ति के रूप में नारी के व्यक्तित्व का विकास नहीं होता है। वह सामाजिक बंधनों तथा स्वयं की नैतिकता के कारण समाज में दबी-दबी-सी रहती है परिणाम स्वरूप उसके व्यक्तित्व में अनेक कुण्ठाओं को स्थान मिलता है। फ्रायड ने अपने मनोविश्लेषणात्मक सिध्दान्त में नारी की अनेक समस्याओं के मूल में उसकी यौन समस्या को प्रधानता दी है। उसीप्रकार उपेंद्रनाथ अश्कजी ने भी अपने नाटकों में नायिकाओं के मनोविज्ञान को कुछ अंशतक चित्रित किया है। अश्क के नाटकों में मध्यवर्गीय समाज का चित्रण होने से उनके कुछ नाटकों की नायिकाएँ सामाजिक बंधनों को माननेवाली और नैतिकता का पालन करनेवाली हैं, परिणामस्वरूप मन के विरोध में निर्माण होनेवाली परिस्थिति से उनका जीवन निराशाग्रस्त होता है। जब मन में उत्पन्न भावनाओं का दमन करना पड़ता है तब उससे जीवन अशांत बनता है। आज मध्यवर्गीय समाज में यह चित्र हम देखते हैं। "कैद" की अप्पी का जीवन इसी कारण अशान्त बनता है। अश्क की उच्चमध्यवर्ग की नायिकाओं में अहं और कुण्ठा दिखाई देती है। "भँवर" की प्रतिभा प्रथम प्रेम में असफल होने से अतृप्त,प्यासी और ग्रंथियों से कुण्ठित हो जाती है। अश्क ने अपने नाटकों में मनोविज्ञान को केंद्रबिंदु तो नहीं माना है पर उनके कुछ नाटकों की नायिकाओं की मनोदशा का जो सफल चित्रण हुआ है वह अनायास आ जाने के कारण सहजता से परिपूर्ण बन पड़ा है।

अश्क के नाटकों की नायिकाओं की विशेषताओं पर प्रकाश डालने के बाद यह निष्कर्ष निकलता है कि नारी के प्रति श्रध्दा होने से अश्क का नाटक साहित्य ज्यादातर नारी

जीवन पर प्रकाश डालनेवाला है फिर भी उन्होंने अपने नाटकों की नायिकाओं को केवल एक ही साँचे मे बध्द नहीं रखा है। उन्होंने नायिकाओं के विविध रूपों को पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है। यथार्थवादी समाज में निर्माण होनेवाली नारियों की अलग-अलग समस्याओं को अश्क ने अपने नाटकों की नायिकाओं के द्वारा चित्रित किया है। अश्क के नाटकों की नायिकाओं के विभिन्न रूपों की झलक दिखायी है। "जय-पराजय" में बड़ी रानी के रूप में राजपुती आदर्श नायिका का चित्रण बड़ी सफलता से किया है। "उड़ान" और अलग-अलग रास्ते" की नायिका माया और रानी विद्रोहकर स्त्री को संपत्ति समझकर दासी माननेवाले और पैसे की लोलुपता पर उसका स्वीकार करनेवाले पुरूषों के झूठे अहं को तोड़ डालती है। कुछ ऐसी रूढ़िबध्द नायिकाएँ भी हैं जो सामाजिक मर्यादा तथा परम्परा को तोड़ने का साहस न होने से अपना जीवन खुद बर्बादी के रास्ते पर बढ़ाती हैं। कुछ नायिकाएँ मानसिक कुण्ठा से इतनी ग्रस्त हैं कि वे उस मनोवृत्ति से अंत तक बाहर नहीं निकल पाती हैं।

अश्क के अपने नाटकों की नायिकाओं को केवल श्रध्दारूपी, प्रेरणादायी देवी ही नहीं माना बल्कि अन्याय के प्रति विरोध करनेवाला उसका विद्रोही रूप, समाज की लांछना से डरनेवाला उसका रूढ़िबध्द रूप और उसका मानसिक कुण्ठाग्रस्त रूप दिखाकर उनकी समस्याओं को पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है।

मेरे लघु शोध-प्रबंध की मौलिकता यह है कि

(१) उपेंद्रनाथ अश्क के नाटकों की नायिकाओं को केंद्र में रखकर उनका विशेष अध्ययन यहाँ हुआ है।

उपलब्धियाँ

(१) अश्क नाटकों की नायिकाओं की स्वतंत्रता तो चाहते हैं, परंतु इसके लिए वे उसकी रूढ़ियों एवं जर्जरित मान्यताओं को समाप्तकर ऐसी नवीन सामाजिक व्यवस्था का निर्माण चाहते हैं, जिसमें प्रत्येक नायिका को प्रगति का समान अवसर मिले।

(२) अश्कजी ने जीवन और समाज का सत्य चित्रित कर नायिका को यथार्थ दिशा प्रदान की है। उसकी गुत्थियों, उलझनों को पूर्ण व्यापकता एवं विराटता की पृष्ठभूमि पर परिचित कराते हुये उसे निरन्तर संघर्षरत रहने की प्रेरणा दी है। उन्होंने नायिका के व्यक्तित्व के विविध रूपों को कहीं भी छिपाया नहीं है।

अनुसन्धान की नई दिशाएँ

उपेंद्रनाथ अश्क के नाट्य-साहित्य पर निम्न दिशाओं में स्वतंत्र रूप से अनुसन्धान किया जा सकता है -

(१) अश्क के नाटकों में नारी चित्रण।

(२) अश्क के नाटकों में चित्रित स्त्री-पुरूष सम्बन्ध।

(३) अश्क के नाटकों में चित्रित समाज-जीवन।

(४) अश्क के नाटकों का कथ्य और शिल्प।

यहाँ मेरे अपने विषय की सीमा है। शायद आनेवाले शोधार्थी भविष्य में उपर्युक्त विषय पर शोधकार्य करेंगे।

-o-o-o-o-

परिशिष्ट

परिशिष्ट क्र १

उपेंद्रनाथ अश्कजी का पत्र

Upendra Nath Ashk
Phone 603023 623287
Phone | 603023.
आवास |
5, Khusro Bagh Road, Allahabad-211001

२४/१२/९४

प्रिय प्रतिमा बेटी,

तुम्हारा पत्र २/१२/९४ का समय से मिल गया था। पढ़ भी लिया था। लेकिन तुमने लिखा कि मैं अपने हाथ से पत्र लिखूं, लेकिन बेटी, उम्र जब ८५ में चली जाय, आँखों के कई आपरेशन के बावजूद रेटिना damage हो जाने से बेहतर न हो, पढ़ना लिखना magnifying glass के बिना संभव न हो, हाथों के अँगूठे आर्थराइटिस से सूज जायें तो क्या चारा (यातनादायक बन जाता है। [illegible]

संशोधनकर्ताओं को मैं उतना [illegible] नहीं देता मुझे आलोचक शोध (पद्धति) में कोई आस्था नहीं, जो दूसरों के चबाये हुए निवालों को चबाता, गलत सही तथ्यों से गढ़े दूसरों के वक्तव्यों को बिना स्वयं शोध किये कि सच है या झूठ मतलब की हद तक उद्धृत किये जाते हैं। [illegible]

छात्र रचनाएँ पढ़ते हैं। संदर्भ ग्रन्थों के [illegible] मैं लेखक को लिख सकते हैं अथवा आप मिलते हैं। दूसरों के भरोसे पढ़ते हैं। लेखक से प्रश्न करते हैं। तब शोध ग्रन्थ लिखते हैं। मेरे नाटकों और उपन्यासों पर जापान में या अथवा अमरीका में जो paper और शोध ग्रंथ लिखे गये हैं वैसा एक भी यहाँ नहीं लिखा गया। 'गिरती दीवारें' उपन्यास मात्र पर शोध करने वाले ने ९०० पृष्ठों का प्रबंध लिखा था। उसे पाने तक शामिल लिया। यहाँ वैसे ५ प्रकाशाई नहीं बना सकता।

लेकिन तुमने मेरे नाटक (सब न सही) पढ़े हैं और अपना मतलब लेती हो। मुझे बहुत खुशी हुई। इस लिए विस्तार से उत्तर दे रहा हूँ।

देखो, तुम को मेरे बड़े नाटकों में अव्वल तो तीन नाटक तो जरूर पढ़ने चाहिएँ। बड़े खिलाड़ी, अलग अलग रास्ते और तौलिये बाद कैद का लिखा हुआ दूसरा version — लौटता हुआ दिन! और पढ़ सको तो मेरा महत्त्वपूर्ण नाटक अंजो दीदी, बड़े खिलाड़ी थोड़ा हटकर लिखी

Upendra Nath Ashk

Phone { 3023
3380

5, Khusro Bagh Road, Allahabad-211001

३

कमज़ोर हो गया। बहुत अच्छा लिखा गया नाटक
था — आखिरी किश्त तक। इसमें आया कोई
झमेला नहीं। आवेग [illegible] है, बदल
दिया Verbose हो गया। नाटक का [illegible]
लेकिन नायिका उसकी [illegible] [illegible] बावजूद
के बावजूद पति के चुनाव के सिलसिले
पूर्णतः माता-पिता पर निर्भर करती है।
इसमें कुछ नहीं कहती न विरोध में
आवाज़ उठाती है, हमारे ~~नि~~ निम्न
मध्य वर्गों की देहों पर [illegible] आज
के युग में परम्परागत ढंग से जीने
वाली लेकिन नायिका है। आगे बढ़
के लिए [illegible] बाहुल्य है।

अलग-अलग सीन, जहाँ तक
नाटक समस्या का सवाल है बहुत ही
महत्व पूर्ण नाटक है। पात्र-पात्रों के
रूप बनता है। इसका [illegible] [illegible] में
नहीं बना हुआ। अपने [illegible] में 'नाच-
गान', लेकिन वास्तव में बहुत सार्थक
नाटक है। अफ़सोस है किसी आलोचक
अथवा अध्यापक ने उसके महत्व पर
उँगली नहीं रखी।

जो बात मैं अब लिख रहा हूं, वह मैंने पहले कभी नहीं लिखी। आलोचकों और अध्यापकों की मूर्खतापूर्ण समीक्षाएं पढ़ता रहा हूं और मन ही मन हंसता रहा हूं। तुमने नाटक पढ़कर बहुत अच्छा पत्र लिखा है। इसलिए तुम्हें उसका मर्म समझाता हूं। पढ़ना लिखना एम० ए० तक ही तो लिखना-लिखना होता है। लिख लिया हो तो forget about it और न हो तो नाटक पढ़ो और मुझे पत्र न लिखो।

अलग अलग लोगों में दो बातें हैं।

बाप दादा, माँ-बाप, डिस्टेन्स और आलोचना है। वह बड़े काम [illegible] हर तरह के बाद में माँ बाप में एक लड़की का विवाह करना लेकर भी मतलब है। लड़का कॉलेज में पढ़ता है। बाप बहुत ही सख्त

लड़की का पिता | है। केवल सम्पत्ति को देखता है। पुराने विचारों का है। लड़की वह [illegible]

मिलता | लड़का मिलता और लड़की से प्यार करता है। वह बाहर और पसन्द नहीं करता। उसे उसके दहेज है, जब वह विवाह

(लड़का) इसकी लड़की की शादी करने का फैसला करता है। [illegible] में आदमी पर दौड़ता है, लेकिन विवाह सम्पन्न हो चुकता है। पिता सम्पत्ति को भूल जाता है

Upendra Nath Ashk

Phone { 3023 / 3380

5, Khusro Bagh Road, Allahabad-211001

ते बादशाही मरते पतित हैं। कहते हैं लड़के का दिमाग खराब हो गया है। वह ठीक मार्ग पर आजायगा इन बहू को ले जाएँगे। इसको अपनी जेब और बहू मानेंगे। खराब नहीं होने देंगे आदि... आदि...

पिता नहीं जाना चाहते, पर लड़की ससुर के साथ जाने पर तैयार हो जाती और पिता की बात नहीं सुनती।

अपनी तरफ़ (अब) दे बने को यह लड़की चाहती थी और जो प्यार वादी है। लेकिन बात इतनी नहीं थी। वह अपने उस निकम्मे पति को बहुत चाहने लगी है। वह शुमार है। सुशिक्षित और सुसंस्कृत है। यद्यपि वह है। वह अपनी देख सुनेगी पर भी, उसकी निगाह में भी दया आती है, पर वह मजबूर है। लड़की उसके नजदीक रहना चाहती है कि उसका मन करे वह वह मन्नें है उसी लड़की के साथ रहे, तब वह उसकी देखभाल करेगा। उसको कुछ नहीं कहेगा।

(यह न कि यह बात कही लिखी नहीं जाती केवल [illegible] से संकेतित है यदि कोई उसने प्यार और [illegible] से पहले पुरुष से लड़कियाँ प्यार करने लगती हैं। इसका क्या कहें। प्यार कुछ अजीब-सी शै है और इसे explain नहीं किया जा सकता।)

पिता बड़े ला.जी के विवाहित

react करते हुए, न चाहते हुए भी स्त्री को पढ़ाता है और अब कैरियर वाले अमीर घरानों में उसका विवाह तय करता है। क्योंकि वे उसकी ओर से आश्वासन देते हैं कि वह लड़की के नाम एक मकान और रुपया कर देगा ताकि वह अपने पति के साथ सुख से रह सके पर ऐसा कि होता है। वे लोग बार बार कहते हैं कि हमें कुछ नहीं चाहिए भगवान का दिया सब कुछ है। केवल सुशिक्षित लड़की चाहिए आदि... आदि...

पिता शादी कर देते हैं। दहेज भरपूर देते हैं, पर न लड़की के नाम मकान करते हैं, न रुपया।

वे लोग अपने से अमीर हैं। अपने से थोड़े हैं। सारी जायदाद उनकी पड़ी है। लड़के ने मकान और रुपये के लालच में शादी की थी। वह नहीं मिलता तो वह लड़की की जिन्दगी हराम कर देता है। लड़की वापस पिता के पास आ जाती है। दुनिया वालों के पिता मिलते हैं। वह फिर आश्वासन देते हैं और अब कि जाने से इनकार कर देती है।

चूंकि पिता जानते हैं कि लोग महाराष्ट्र में लड़कियों को घर नहीं रख सकते वे अपने घर ही बुलाते हैं। वे लड़के को मनाया करते हैं। लड़की के नाम मकान और रुपया लिख देते हैं (जो उसका है, मैं नहीं समझता कि पढ़ लेना ()

Upendra Nath Ashk

Phone { 3023 / 3380

5, Khusro Bagh Road, Allahabad-211001

7

लड़का खुशी-खुशी लड़की को लेने आ जाता है। पिता तत्काल लड़की को तैयार होने के लिए कहते हैं, पर वह पति खुदगर्ज, ससुर के पैसे पर आँख रखने वाले, उसे नहीं; मोटर और मकान को चाहने वाले पति के साथ जाने से इनकार कर देती है। पिता बहुत गुस्से होते हैं। वे पुराने ख्याल के ब्राह्मण हैं लड़की को धमकी देते हैं। किन्तु पति के वह व्यवहार याद कर [illegible] नहीं रहेगी वह पिता के घर में [illegible] रहती है। और भाई के साथ चल देती है। [illegible] कहती है [illegible] के लिए पति के साथ जाना भी [illegible] [illegible] है, [illegible] नहीं [illegible] [illegible] कठिन रहती है। मेरा नाटक भी आधुनिक है।

वह [illegible] [illegible] है, वह प्रेम [illegible] और [illegible] है।

नाटक में जो बात [illegible] [illegible] है, वहीं [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] नहीं [illegible] गया। वह यह है कि [illegible]

[illegible], अपने पति से प्रेम नहीं मिलता [illegible]

उस [illegible] कोई कविता देख रहे थे [illegible] वाले [illegible] से [illegible] है। [illegible] चली जाती। और वह [illegible] घूमा करती है। यह सब [illegible] में हो, कहीं लिखा नहीं।

सो करो, यह [illegible] और [illegible] – विद्रोह वातावरण का ही प्यार और [illegible] वातावरण है। यद्यपि उसका कवि है, फिर भी [illegible] और आलोचक ने [illegible] नहीं। यह लो मैं केवल तुम्हें ही लिख रहा हूँ।

इसके बाद तो नीलाभ प्रकाशन से इसका paper back पाकेटबुक संस्करण निकलेगा। १२/१४ का होगा। १०/१५ %. [illegible] देना और [illegible] देना। यह मुझे [illegible]। [illegible] में [illegible] रहेगा।

तुमने पहले प्यार के असफल होने [illegible] आत्मघात के [illegible] वाली लड़की की बातें लिखी हैं। मैंने कोई ऐसी लड़की नहीं देखी। [illegible] हूँ। सच्चे और [illegible] वाले होते हैं मुझे कैसी लड़की नहीं मिली।

यह तो ठीक है कि हमारे समाज में बाल विवाह किया जाता है, [illegible] है तो उसे पालने [illegible]; [illegible] जाति की [illegible]।

Upendra Nath Ashk
Phone { 3023
3380
5, Khusro Bagh Road, Allahabad-211001

२

जवाब दिला देती है। लेकिन natural
desires को दबाते हैं (और sex भी प्रकृत
इंसान की इच्छा ही है) उन में
कई तरह के मानसिक विकार पैदा हो जाते हैं।
वे कुंठित हो जाती हैं; Fadist सनकी
हो जाते हैं।

फ्रायड कहते हैं कि लेखकों का यही माध्यम है:
sublimation का, वे जीवन में किसी
बड़े उद्देश्य से लग जाएँ और sex को
sublimate करें। मैं नाटक लिखता
था कई सालों से [illegible] मैं नाटक को
अपने उस मित्र के लिए, जिसे मैं छोटे
भाई के समान मानता था, मैंने विलायत
पढ़ने जाने के [illegible] आदि द्वारा
के उपरान्त [illegible] आत्माएँ [illegible] नाटक
आदमी के [illegible] अभावों, आलोचना
[illegible] के [illegible] में मिलना और
विलायत पढ़ने जाना दिखाया। जो [illegible] किया
कि आदर्श [illegible] भी नाटक में ही हैं।
[illegible] आधुनिक नाटक में [illegible]
और [illegible] मैं बहुत नाटक में [illegible]
[illegible] नाटक में आदर्श [illegible]
मिला। [illegible] मैं नाटक [illegible] छोड़

उपन्यास लिखने लगा। यहाँ तो किसी को
समझ ही नहीं आता। [illegible]
लिखा है — It is the only great
novel in modern Hindi Fiction.
अभी तो वह पहले [illegible]
[illegible] के अनुवाद हो। [illegible] और [illegible]
[illegible] ४०० पृष्ठ लिख चुका हूँ।
३५ [illegible] तो [illegible]
[illegible] पहुँचा।

0

[illegible] तो नहीं, [illegible]
[illegible] assertions
[illegible]
"[illegible]" [illegible]
[illegible] है और [illegible]
[illegible] हो जाती है
[illegible]
[illegible] है
[illegible] है और [illegible]
[illegible] और [illegible] हैं [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] assert
[illegible]
[illegible]
[illegible] और [illegible] है, [illegible]

Upendra Nath Ashk

Phone { 3023 / 3380

१९ — 5, Khusro Bagh Road, Allahabad-211001

~~कोई~~ पहले अपने फुरसत के दिनों में महाभारत-
का अध्ययन नहीं कर पाता। पढ़ने बैठता
तो [illegible] पाँच दिन हो। [illegible] पढ़ सकता
हूँ तो नाटक पढ़ गया।

o

एक नाटक तुम्हें और पढ़ना चाहिए —
उ० को पढ़िए। यह नाटक [illegible]
नहीं है। आजकल तो इसकी चर्चा है कि
माता पिता अपने बच्चों को [illegible]
के [illegible] चाहते हैं और
बच्चों को [illegible] पढ़ने को बाध्य
करता है। लेकिन नाटक की नायिका
[illegible], [illegible] नाटकों में
[illegible] पूछ [illegible], नाटक [illegible]
तथा अन्य प्रादेशिक भाषाओं में
अनूदित हो चुका है और देश विदेश
में खेला गया। [illegible]
[illegible]। शायद तुमने देखा

o

मैं यहाँ [illegible] की बात [illegible] में
लिख रहा हूँ। '[illegible]'
की प्रतिभा [illegible], [illegible], देवताओं
की छायाओं, [illegible], [illegible]

[illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible]
[illegible] — [illegible]
[illegible], [illegible], [illegible] —
[illegible]
[illegible], [illegible]
[illegible] discuss
[illegible]।

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]। [illegible]
[illegible]। [illegible]
[illegible]। [illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]